समाज में तमाम ऐसे छोटे–छोटे मुद्दे सदैव विद्यमान रहते हैं जिनपर ना तो मीडिया की निगाह जाती है और ना ही नीति निर्धारकों की। जबकि इन छोटे–छोटे मुद्दों का जनता और समाज पर इतना गहरा असर पड़ता है कि कई बार ये जबरदस्त सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक उथल पुथल का कारण बन जाते हैं। ऐसे ही आम सामाजिक मुद्दों को खास मंच प्रदान कर उनके हल तलाशने का एक प्रयास है "जीविकाः एशिया लाइवलीहूड डॉक्यूमेंट्री फिल्म फेस्टिवल"। मिसिगन यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे पार्थ जे शाह द्वारा वर्ष 2003 में दिल्ली से शुरू हुआ डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के इस समारोह ने वर्ष 2013 के अपने दस साल के सफर में देश की सरहद

आम जनता की आवाज को खास मंच करता है जीविका फेस्टिवल

डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के इस समारोह ने वर्ष २०१३ के अपने दस साल के सफर में देश की सरहद से निकल. कर चीन, सिंगापूर, इंडोनेशिया, मलेशिया सहित एशिया के तमाम देशों में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर ली है। इसका परिणाम फिल्म फेस्टिवल के दौरान स्क्रीनिंग के लिए तमाम देशों से आने वाली प्रविष्ठियां व फिल्मों के प्रदर्शन के दौरान इसके साक्षी बनने की चाह रखने वाले सेलेब्रिटियों की बढ़ती तादात के रूप में सामने आयी है।

से निकलकर चीन, सिंगापूर, इंडोनेशिया, मलेशिया सहित एशिया के तमाम देशों में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर ली है। इसका परिणाम फिल्म फेस्टिवल के दौरान स्क्रीनिंग के लिए तमाम देशों से आने वाली प्रविष्ठियां व फिल्मों के प्रदर्शन के दौरान इसके साक्षी बनने की चाह रखने वाले सेलेब्रिटियों की बढ़ती तादात के रूप में सामने आयी है। गत वर्षों में जहां इस समारोह में फिल्म अभिनेत्री शबाना आजमी, नंदिता दास, फिल्म निर्माता–निर्देशक सुभाष घई आदि अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं वहीं इस वर्ष केंद्रीय मंत्री वीरप्पा मोइली, टेस्ट क्रिकेटर मुरली कार्तिक, समाज सेविका अरुंधति रॉय, वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैय्यर सहित अन्य जानी मानी हस्तियां फिल्मों की स्क्रीनिंग के दौरान उपस्थित रहीं।

दिल्ली में इस वर्ष 29 अगस्त से शुरू होकर 1 सितंबर तक चले "10वें जीविका एशिया लाइवलीहुड डॉक्यूमेंट्री फिल्म

फेस्टिवल" में स्क्रीनिंग के लिए चीन, सिंगा. पुर, इंडोनेशिया, नेपाल, बांग्लादेश सहित एक दर्जन देशों से सौ से ज्यादा डॉक्यूमेंट्री फिल्में प्राप्त हुईं। लेकिन खास बात यह है कि फिल्मों में उठाए गए मुद्दे इतने जमीनी थें कि ज्यूरी को इसकी शॉर्ट लिस्टिंग करने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। सेलेक्शन और रिजेक्शन की उहापोह से निकलने का कोई रास्ता मिलता न देख ज्यूरी ने पहली बार तीन दर्जन से ज्यादा फिल्मों की स्क्रीनिंग का फैसला लिया। इसके लिए आम तौर पर तीन दिनों तक चलने वाले जीविका फेस्टिवल को पहली बार चार दिनों तक के लिए विस्तारित करना पड़ा।

इंडिया हैबिटेट सेंटर के कैज्यूरिना व गुलमोहर हॉल में चार दिनों तक चले इस फेस्टिवल के दौरान दस देशों की 38 डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान उक्त फिल्मों से जुड़ी टीम भी मौजूद रही और फिल्म के प्रदर्शन के बाद उसमें उठाए गए मुद्दों के बाबत दर्शकों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

फिल्म फेस्टिवल के दौरान "रियलाजिंग द पोटेंशियल ऑफ द बाम्बू सेक्टर इन इंडिया", "फ्रॉम स्वतंत्रता टू आजादीः द रोड टू इकोनॉमिक फ्रीडम" व "डू वी हैव द राइट पॉलिसी फ्रेमवर्क फॉर स्किल डेवलपमेंट इन इंडिया येट?" आदि विभिन्न मुद्दों पर पैनल डिस्कशन का आयोजन भी किया गया जिसमें सेंटर फॉर सिविल सोसायटी सहित अन्य सामाजिक संगठनों और प्रशासनिक अधिकारियों ने विचार व्यक्त किए।

इसके अतिरिक्त 'दिल्ली फोटोग्राफी क्लब' के संयुक्त तत्वावधान में एक फोटोग्राफी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में आजीविका के लिए किए जाने वाले जद्दोजहद आधारित 40 फोटोग्राफ प्रदर्शित किए गए।

समारोह के अंतिम दिन विजेता डॉक्यूमेंट्री फिल्मों को जीविका शील्ड, सर्टिफिकेट व नगद धनराशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। इस दौरान 'शेफर्ड ऑफ पैराडाइज', 'बॉटल मसाला इन मो. इली', 'द डंकी फेयर', 'इन सिटी लाइट्स', 'हैव यू सीन द अराना' व 'कैन वी सी द बेबी बम्प प्लीज' को विभिन्न वर्गों की सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री फिल्म के सम्मान से नवाजा गया। विजेता फिल्मों को पुरस्कार स्वरूप क्रमशः 60 हजार, 40 हजार, 30 हजार व दस–दस हजार रूपए व प्रशस्ती पत्र प्रदान किया गया। समारोह का समापन शास्त्रीय संगीत गायिका विजया शाह के गायन प्रस्तुति के साथ हुआ।